2. डायरी

डायरी गद्य साहित्य की एक प्रमुख विधा है इसमें लेखक आत्मसाक्षात्कार करता है। यह अपने आप संप्रेषण की स्थिति में होता है। मानव के समस्त भावों, उद्वेगों, अनुभूति विचारों को अभिव्यक्त करने में सर्वोच्च का सर्वोच्च स्थान है। डायरी का मुख्य उद्देश्य आत्मविश्लेषण एवं आत्मविवेचन होता है। इसमें से किसी व्यक्ति विशेष जो स्वयं इसको लिखने वाला होता है, का ही व्यक्तिगत प्रतिबिम्बित होता है।

डायरी साहित्य का विभाजन व्यक्तिगत डायरी और साहित्यिक डायरियों के रूप में किया जा सकता है। व्यक्तिगत डायरी का सम्बन्ध व्यक्ति विशेष संहीता है, जिसमें लेखक अपने जीवन की घटनाओं, प्रसंगों, निजी अनुभूतियों, विचारों तथा तथ्यों को लिखता रहता है। ये डायरियाँ उसकी गोपनीय होती हैं। साहित्यिक डायरी में कल्पना को रचनात्मक साहित्य को स्थान दिया जाता है। उदाहरणार्थ—डॉ. देवराज का उपन्यास 'अजय की डायरी' और मुक्तिबोध की पुस्तक एक साहित्यिक की डायरी।

डायरी का स्वरूप—डायरी मनुष्य के निजी कर्मों और समाज के प्रति उसकी संवेदना का कैटलॉग है। इसमें वही अंकित किया जाता है जो मनुष्य दिखाना चाहता है। इसका लेखन निजता को निज के लिए अंकित करने के असजग प्रयास से यह मानकर आरम्भ किया गया कि अपनी डायरी का लेखक ही उसका पाठक भी होगा। एक सामान्य व्यक्ति भी अपने जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का तिथिवार सहित अंकन कर, उसे सहेज सकता है। साहित्यकार का डायरी लेखन सामान्य मनुष्य के डायरी लेखन से विशिष्ट होता है। उसकी साहित्यदृष्टि का विस्तार उसकी निजता में भी परिलक्षित होता है। डायरी रूपी उसके निजी दस्तावेज में भी देश-दुनिया के बृहत्तर आयामों की झलक मिलती है। अपने कथा साहित्य में लेखक इस विधा का सजग प्रयोग करते हैं। "हिन्दी में आरम्भिक डायरी शैली में लिखे वृत्त हैं—श्री राम शर्मा की सेवाग्राम डायरी" (1946 ई.) और घनश्यामदास बिड़ला की 'डायरी' के पन्ने। विश्वविद्यालय हिन्दी शोध और अध्यापन के आदि व्यवस्थापक प्रो. धीरेन्द्र वर्मा ने अपनी एक संक्षिप्त डायरी प्रकाशित की है 'मेरी कॉलेज की डायरी'। डायरी का अधिक बौद्धिक और चिन्तन प्रधान रूप जर्नल आगे चलकर नयी कविता युग में प्रचार पाता है। यों डायरी और जर्नल के बीच का लेखन भारतेन्दु के 'कालचक्र' में द्रष्टव्य है, जहाँ अपने समय तक के भारतीय इतिहास की प्रमुख तिथियाँ और घटनाएँ अंकित की गई हैं और जिसमें उन्होंने नोट किया था—'हिन्दी नए चाल में ढली, सन 1873 ई.।' (रामस्वरूप चतुर्वेदी)। आगे समाहार के साथ ही हिन्दी साहित्य के विकास में इन सभी नव्यतम गद्य विधाओं के योगदान को स्पष्ट करते हुए चतुर्वेदीजी लिखते हैं—आधुनिककालीन गद्य के विकास और परिष्कार में नए माध्यमों का गुणात्मक योगदान रहा है, क्योंकि यहाँ लेखक कल्पना का सहारा न लेकर पूरी तरह से भाषिक क्षमता के विकास में संलग्न रहता है। इस रूप में नाटक, उपन्यास, कहानी जैसी पूर्व प्रचलित गद्य विधाएँ कविता के अधिक निकट हैं, भले उनका वाक्य-विन्यास अलग-अलग तरह का हो। गद्य का वास्तविक रूप जीवनी-आत्मकथा, संस्मरण-रेखाचित्र-यात्रावृत्त जैसे नए माध्यमों में ही देखने को मिलता है और यहीं आचार्य शुक्ल का आधुनिक काल के लिए प्रस्तावित नाम 'गद्य-काल' सही ढंग से चरितार्थ होता है।

हिन्दी में डायरी विधा की कुछ प्रमुख कृतियाँ हैं—एक साहित्यिक की डायरी (मुक्तिबोध, 1964 ई.), पंचरत्न (रामविलास शर्मा, 1980 ई.), वनतुलसी की गंध (फणीश्वरनाथ रेणु, 1984 ई.), मेरी जेल डायरी (जयप्रकाश नारायण, 1975-77 ई.) मनबोध मास्टर की डायरी (विवेकीराय, 1984 ई.), मलयज की डायरी (नामवर सिंह, 2000 ई.) इत्यादि। निःसन्देह डायरी को एक विधा के रूप में पत्र-पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमि मिलती रही है।

Scanned with CamScanner